दुआ - उल - अ'दीला

(ईमान पर से भटकने से बचने की दुआ.)

अ'दीला मौत से मुराद, मौत के वक़्त हक़ से बातिल की तरफ़ फिर जाना है, यानी जाँ-कुनी (मौत) के वक़्त शैतान शक में डाल कर गुमराह कर देता है और यू इंसान ईमान छोड़ बैठता है!यही वजह है की दुआओं में ऐसे सूरते हाल से पनाह तलब की गयी है! फ़ख़रुल मोहक़्क़े'क़ीन ने फ़रमाया के जो मौत के वक़्त ईस ख़तरे से महफ़ूज़ रहना चाहता है इसे ईमान और उसूले दीन की दलीलें ज़ेहन में रखना चाहिए और फिर इनको बतौर अमानत ख़ुदा की बारगाह में पेश कर देना चाहिए ताकि मौत की घड़ी में यह अमानत इसे वापस मिल जाए! यह दुआ ईमान की हिफ़ाज़त करती है! सभी मोमिन क़ो चाहिए की शैतान क़ो सूर रखने के लिये ईस दुआ की बराबर तिलावत करें ताकि ईमान पक्का और मज़बूत रहे और ख़ैर का दामन हाथ से न छूटे! मरने के आखरी वक़्त में ईस दुआ की तिलावत ज़रूर करें, गर यह मुमकिन न हो तो किसी और क़ो कहें की ईस दुआ की तिलावत बुलंद आवाज़ में करे, ताकि मरने वाले के ज़ेहन में शैतान कोई शक न डाल सके, अपनों क़ो छोड़ने के ग़म में उदासी न हो, क्योंकि यह सारी शैतानी ताक़त शक और गुमराही पैदा करती है ताकि मरने वाला अपने ईमान पर न मर कर शक, गुमराही और उदासी की मौत मरे!

दुआए अहद का हिंदी अनुवाद	दुआए अहद की अरबी को हिंदी में पढ़े	दुआए अहद अरबी में पढ़ें
बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम	बिस्मिल्लाहिर रहमानिर रहीम	بسم الله الرحمن الرحيم
ख़ुदा गवाह है की सिवाए इसके कोई माबूद नहीं, नीज़ मलाइका और बा-इन्साफ़ साहिबे ईल्म भी ईस पर गवाही दे रहे हैं की सिवाए इसके कोई माबूद नहीं जो साहिबे इज़्ज़त व हिकमत वाला है, यक़ीनन ख़ुदा का पसंदीदा दीन इस्लाम ही है और मै जो एक ना-तवां गुनाहगार ख़ताकार हाजतमंद और	शाहिदा अल्लाहु अन्नाहू ला इलाहा इल्ला हुवा वल मला'इ-कतु व उलू अल-इल्मी क़ा'इमन बिल क़ीस्ती ला इलाहा इल्ला हुवा अल-अज़ीज़ो अल-हकीमो इन्नद दीना इंदल लाहिल इस्लाम व अना अल अब्दु अल्द-दाई'फ़ू अल-मुज़'निबू अल-आसी'अल मुहताजू अल-हक़ीरू अश'हदू लिमुन'इमी व ख़ालीक़ी व	شَهِدَ اللهُ أَنَّهُ لاَ إِلـهَ إِلاَّ هُوَ وَالْمَلاَئِكَةُ وَأُولُوا الْعِلْمِ قَائِماً بِالْقِسْطِ لاَإِلـهَ إِلاَّ هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ إِنَّ الدِّينَ عِنْدَ اللهِ الْاِسْلاَمُ، وَأَ نَا الْعَبْدُ الضَّعِيفُ الْمُذْنِبُ الْعاصِى الْمُحْتاجُ الْحَقِيرُ، أَشْهَدُ لِمُنْعِمِى وَخالِقِى وَرازِقِى

बे-मायाह बन्दा हूँ मै अपने मून'ईम, ख़ालिक़, राज़िक़ और अपने करम फ़रमा ख़ुदा की गवाही देता हूँ, जैसे इसने अपने ज़ात की गवाही दी है, नीज़ मलाइका और साहिबे ईल्म बन्दों ने भी इसकी गवाही दी है की सिवाए इसके कोई माबूद नहीं जो नेमत एहसान व करम और अता का मालिक है और वो हमेशा साहिबे क़ुदरत और दा'इमी साहिबे ईल्म, जिंदा, यकता, और हमेशगी वाला मौजूद है, सुनने वाला, देखने वाला, इरादे वाला, ना-पसंद करने वाला, पालने वाला, बे'नेयाज़ है और वो ईन सिफ़ात का सही हक़दार है और वो दीगर सिफ़ात का भी मालिक है जो बहुत बड़ी सिफ़ात हैं की क़ुदरत और क़ुव्वत के वजूद में आने से क़ब्ल वो साहिबे क़ुव्वत था, और वो साहिबे ईल्म था, ईल्म और दलील की ईजाद से पहले वो मुस्तक़िल सुलतान था, जब न कोई मालिक था और न कोई माल, वो ला'ज़वाल पाकीज़ा था, हर हर हाल में की ईस का वजूद क़ब्ल से क़ब्ल और अज़्लों	राज़ीक़ी व मुक्रीमी कमा शहदा लिज़ा'तीही व शहदत लहू'अल मला-इ-कतु व उलू'अल इल्मी मिन इबादिही बी-अन'नहु ला इलाहा इल्ला हुवाज़ु' अन'नि अमी वल-इहसानीवल क-रामी वल इत-मिनानी क़ादिरून अज़लियुन आलिमुन अबादियुन हय्युन अहदियुन मौजूदुन सर'मदियुन समी'यून बसी'रुन मुरी'अदुन कारिहून मुद्रिकुन समद'दियुन यस'त-हीक्कू हाज़िही अल्स-सिफ़ाती व हुवा अला मा हुवा अलय्ही फ़ि ईज़-ज़ी सीफ़ातीही काना क़'वीयन क़बला वुजुदी अल-क़ुदरती वल क़ुव्वती व काना अलीमन क़बला इजादी अल-इल्मी वल-इल्लती लम यज़ल सुल्तानन ईज़-ला ममला'कता व ला माला व लम यज़ल सुब'हानन अला जमी-अल अहवाली वुजुदोहू क़बला अल-क़बली फ़ि अज़्ली अल-अज़ाली व बक़ा'उहू बा-दा अल्बा-दी मिन गैरी इनती-क़ालीन व ला ज़वालिन ग़नियुन फ़ि-अल	وَمُكْرِمِي كَما شَهِدَ لِذاتِهِ، وَشَهِدَتْ لَهُ الْمَلائِكَةُ وَأُولُوا الْعِلْمِ مِنْ عِبادِهِ، بِأَنَّهُ لاَ إِلَهَ إِلاَّ هُوَ ذُو النِّعَمِ وَالْاِحْسانِ،وَالْكَرَمِ وَالْاِمْتِنانِ، قادِرٌ أَزَلِيٌّ، عالِمٌ أَبَدِيٌّ، حَيٌّ أَحَدِيٌّ، مَوْجُودٌ سَرْمَدِيٌّ، سَمِيعٌ بَصِيرٌ مُرِيدٌ كارِهٌ، مُدْرِكٌ صَمَدِيٌّ، يَسْتَحِقُّ هَذِهِ الصِّفاتِ وَهُوَ عَلَى ما هُوَ عَلَيْهِ فِي عِزِّ صِفاتِهِ،كَانَ قَوِيّاً قَبْلَ وُجُودِ الْقُدْرَةِ وَالْقُوَّةِ، وَكانَ عَلِيماً قَبْلَ إِيجادِ الْعِلْمِ وَالْعِلَّةِ، لَمْ يَزَلْ سُلْطاناً إِذْ لاَ مَمْلَكَةَ وَلاَ مالَ،وَلَمْ يَزَلْ سُبْحَاناً عَلَى جَمِيعِ الْاَحْوالِ،وُجُودُهُ قَبْلَ الْقَبْلِ فِي أَزَلِ الْاَزالِ،وَبَقاؤُهُ بَعْدَ الْبَعْدِ مِنْ غَيْرِ انْتِقالٍ وَلاَ زَوالٍ،غَنِيٌّ فِي الْاَوَّلِ وَالْاَخِرِ،

के अज़ल से है और इसकी बक़ा बाद से बाद है की जिसमे न तब्दीली है न ज़वाल, वो अव्वल व आख़िर से बे'नेयाज़ और ज़ाहिर व बातिन में बे]परवाह है, इसके फ़ैसले में ज़ुल्म नहीं, और इसकी मर्जी में ताराफ्दारी नहीं, इसकी तकदीर में सितम नहीं और इसकी हुकूमत से फ़रार मुमकिन नहीं, इसका क़हर आये तो कोई पनाह नहीं, और वो अज़ाब करे तो निजात नहीं, इसकी रहमत ग़ज़ब से पहले है, जिसे वो तलब करे वो फ़रार नहीं कर सकता, ईस ने फ़रीजों में अज़दाद दूर कर दें और तौफीक़ देने में अदना व आला में बराबरी रखी है, हुकुम करदा बातों पर अमल क़ो मुमकिन और गुनाह से बचने का रास्ता आसान कर दिया है, ईस ने वुस'अत व ताक़त से कमतर फ़रीज़े आयद किये हैं, पाक है वो जिसका करम कितना वाज़े और शान कितनी बुलंद है, पाक है वो जिसका नाम कितना उम्दा और एहसान कितना बड़ा	अव्वली वल-आख़िरी मुस्तग़-निन फ़ि अल-बातिनी वल-ज़ाहिरी ला जौरा फ़ि क़ाज़ी'यतेही व ला मय्ला फ़ि मशी'यतेही व ला ज़ुल्मा फ़ि तक़दीरेही व ला महरबा मिन हुकुमतेही व ला मलजा'अ मिन सता'वतेही व ला मन जन मिन नक़ेमतेही सबक़त रहमतुहू ग़ज़ाबहु व ला याफ़ूतोहु अहदुन ईज़ा तलाबोहू अज़'अहा अल इलाला फ़ि अल'तक-लिफ़ी व सव-वा अल-ताव्फ़ीक़ा बयना अल'ज़-इफ़ो वल-शरीफ़ मक'काना अदा'अ अल मा'मूर व सह-हला सबीला इजतिनाबी अल-महज़ूरी लम यु'कल्लीफ़ अत-ता'अता इल्ला दूना अल-वोसे-अ वल-ता-क़ते सुभानोहू मा बयना करामहू व अ ला शा'नोहू सुभानोहू मा अजल-ला नय'लोहू व आ-ज़मा इह'सा-नोहू बा-असा अल अंबिया-अ ली'यु-बय्यिना अद'लोहू व न्साबा अल-औसिया-अ ली-यूजहीरा तौलोहू व फ़ज़'लोहू व जा'अल्ना मिन उम्मती सय्यादी अल-अंबिया'ई	مُسْتَغْنٍ فِى الْباطِنِ وَالظَّاهِرِ، لاَ جَوْرَ فِى قَضِيَّتِهِ، وَلاَ مَيْلَ فِى مَشِيئَتِهِ، وَلاَ ظُلْمَ فِى تَقْدِيرِهِ وَلاَ مَهْرَبَ مِنْ حُكُومَتِهِ وَلاَ مَلْجَأَ مِنْ سَطَواتِهِ وَلاَ مَنْجىً مِنْ نَقِماتِهِ، سَبَقَتْ رَحْمَتُهُ غَضَبَهُ وَلاَ يَفُوتُهُ أَحَدٌ إِذا طَلَبَهُ، أَزاحَ الْعِلَلَ فِى التَّكْلِيفِ، وَسَوَّى التَّوْفِيقَ بَيْنَ الضَّعِيفِ وَالشَّرِيفِ، مَكَّنَ أَداءَ الْمَأْمُورِ، وَسَهَّلَ سَبِيلَ اجْتِنابِ الْمَحْظُورِ، لَمْ يُكَلِّفِ الطَّاعَةَ إِلاَّ دُونَ الْوُسْعِ وَالطَّاقَةِ سُبْحانَهُ مَا أَبْيَنَ كَرَمَهُ وَأَعْلى شَأْنَهُ سُبْحانَهُ مَا أَجَلَّ نَيْلَهُ وَأَعْظَمَ إِحْسانَهُ بَعَثَ الْأَنْبِياءَ لِيُبَيِّنَ عَدْلَهُ، وَنَصَبَ الْأَوْصِياءَ لِيُظْهِرَ طَوْلَهُ وَفَضْلَهُ، وَجَعَلَنا مِنْ أُمَّةِ سَيِّدِ

है, इसने अपने अदल की तशरीह के लिये अंबिया (अ:स) भेजे और अपने फ़ज़ल व करम की इज़हार की ख़ातिर औसिया क़ो मामूर फ़रमाया और हमें नबियों के सरदार, वलियों में बेहतर बरगुज़ेदों में सब से अफ़ज़ल और पाक्बाज़ों में सबसे बुलंद हज़रत मुहम्मद (स:अ:व:व) की उम्मत में क़रार दिया, हम इनपर ईमान लाये और इनके पैग़ाम पर और क़ुर'आन पर जो इनपर नाज़िल हुआ और इनके जा-नशीन पर जिसे इन्होंने यौमे ग़दीर मुक़र्रर किया और अपनी ज़बान से फ़रमाया के यह हैं अली (अ:स) जो मेरा वसी है और मै गवाही देता हूँ की हज़रत रसूल (स:अ:व:व) के बाद नेकोकार ईमाम (अ:स) और बेहतरीन जानशीन हैं जिन में अली (अ:स) ही काफिरों क़ो खत्म करने वाले हैं, और इनके बाद इनकी औलाद के सरदार हसन (अ:स) बिन अली (अ:स) फिर इनके भाई नवासये रसूल (स:अ:व:व), अल्लाह की रज़ाओं के	व खैरी अल औलिया'ई व अफ्ज़ली अल-असफिया'ईव आला अल-अज़्किया'ई मोहम्मदीन सल-लल-लाहो अलैही व आलेही व सल्लामु बेहि व बीमा दा अना इलैही ना'अमन व बिल क़ुर'आनी अल-लज़ी अनज़ल'अहू अलैही व बे वसी'एही अल-लज़ी नसबहू यौमा अल-ग़दीरीव अश'अरा इलैही बे-क़ौलेही हाज़ा अली'युनव अश'हदों अन्ना अल-अ'इम्मता अल-अबरारावल ख़ुलाफ़ा अल-अख़'याराबादा अर-रसूल अल-मुख्तारीअली'युन क़मी'ऊ अल-कुफ्फ़ारी व मिन बा'देही सय्यादु औलादेही अल हसनू इब्ने अलीयिन सुम्मा अखु'अहू अल्स'सिब्तो अल्त'ताबियो ले'मार्ज़ाते अल-लाहे अल-हुस्सैनो सुम्मा अल-आबिदों अलीयुन सुम्मा अल बाक़िरो मोहम्मादुन सुम्मा अल-सादीक़ो जा'फ़रुनसुम्मा अल-काज़िमो मूसासुम्मा अल-रिज़ा अलीयुन सुम्मा अल-तक़ीयो मोहम्मदीन	الْأَنْبِياءِ وَخَيْرِ الْأَوْ لِياءِ وَأَفْضَلِ الْأَصْفِياءِ وَأَعْلَى الْأَزْكِياءِ مُحَمَّدٍ صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَ آلِهِ وَسَلَّمَ، آمَنَّا بِهِ وَبِما دَعانا إِلَيْهِ، وَبِالْقُرْآنِ الَّذِي أَنْزَلَهُ عَلَيْهِ وَبِوَصِيِّهِ الَّذِي نَصَبَهُ يَوْمَ الْغَدِيرِ وَأَشارَ بِقَوْلِهِ هذا عَلِيٌّ إِلَيْهِ، وَأَشْهَدُ أَنَّ الْأَئِمَّةَ الْأَ بْرارَ وَالْخُلَفاءَ الْأَخْيارَ بَعْدَ الرَّسُولِ الْمُخْتارِ عَلِيٌّ قامِعُ الْكُفّارِ وَمِنْ بَعْدِهِ سَيِّدُ أَوْلادِهِ الْحَسَنُ بْنُ عَلِيٍّ ثُمَّ أَخُوهُ السِّبْطُ التّابِعُ لِمَرْضاةِ اللهِ الْحُسَيْنُ ثُمَّ الْعابِدُ عَلِيٌّ ثُمَّ الْباقِرُ مُحَمَّدٌ ثُمَّ الصّادِقُ جَعْفَرٌ، ثُمَّ الْكاظِمُ مُوسى، ثُمَّ الرِّضا عَلِيٌّ، ثُمَّ التَّقِيُّ مُحَمَّدٌ، ثُمَّ النَّقِيُّ عَلِيٌّ، ثُمَّ الزَّكِيُّ الْعَسْكَرِيُّ الْحَسَنُ، ثُمَّ الْحُجَّةُ الْخَلَفُ الْقائِمُ

तलबगार हुसैन (अ:स) हैं, फिर अली (अ:स) बिन अल-हुसैन (अ:स), फिर मुहम्मद बाक़र (अ:स), फिर जाफ़र अल-सादीक़ (अ:स) फिर मुसा काज़िम (अ:स) फिर अली रज़ा (अ:स) फिर मुहम्मद तक़ी (अ:स) हैं इनके बाद अली नक़ी (अ:स) हैं फिर हसन अस्करी अज़-ज़की (अ:स) हैं फिर हज़रत हुज्जत ख़लफ़ क़ाएम अल-मुन्तज़र मेहदी (अ:स) उम्मीद'गाहे ख़ल्क़ हैं, जिनकी बक़ा से दिनया क़ायेम है और इनकी बरकत से मख्लूक़ को रोज़ी मिलती है और इनके वजूद से ज़मीन व आसमान खड़े हैं, और इनके ज़रिये अल्लाह ताला ज़मीन को अदलो-इंसाफ़ से भर देगा, जबकि वो ज़ुल्मो जौर से भर चुकी होगी, मै गवाही देता हूँ की ईन आ'ईम्मा के अक़वाले हुज्जत, इनपर अमल करना वाजिब और इनकी पैरवी फ़र्ज़ है और इन्से मोहब्बत रखना ज़रूरी व लाज़िम है, इनकी अता'अत बाइसे निजात और इन्से	सुम्मा अल- नक़ीयो अलीयुन सुम्मा अल-ज़कियो अल-अस्करीयो अल-हसन सुम्मा अल-हुज्जतो अल-ख़'लफ़ो अल-क़ा'इमो अल-मुन्ता'ज़रो अल-मह'दियो अल-मुर्जा अल लज़ी बे'बक़ा'एही बाक़ी'अत अल'दुन्या व बी'युम्निही रुज़िका अल-वरा व बे वुजुदेही सबा'क़त अल'आरज़ू व़स'समा'उ व बेहि यमला'उ अल-लाहू अल-अर्दा क़ीस्तन व अदलन ब दमा मुली'अत ज़ुलमन व जौरण व अशहदों अन्ना अक़'वालोहुम हुज्जतन व इमतिहा'लहुम फ़री-दतून व ता-अतोहुम मफ़रू-दतून व मवद-दतोहुम लाज़ी'मतुन मक़-ज़ी-यतुन वल ईक़ती'दा-अ बेहीम मुंजी'यतुन व मुख़ाले'फ़तोहुम मुरदी'यतुन व हुम सादातु अहली अल-जन्नती अजमा'ईना व शुफ़ा-अ'उ यौमिद-दीन व अ-इम्मतु अहली-अल अर्जी अला-अल यक़ीनी व अफ़'ज़लू अल-औसिया'ई अल-मरज़ी-ईना व अश-हदू अन्ना	الْمُنْتَظَرُ الْمَهْدِيُّ الْمُرْجَى الَّذِي بِبَقَائِهِ بَقِيَتِ الدُّنْيا، وَبِيُمْنِهِ رُزِقَ الْوَرى، وَبِوُجُودِهِ ثَبَتَتِ الْاَرْضُ وَالسَّماءُ، وَبِهِ يَمْلأُ اللهُ الْاَرْضَ قِسْطاً وَعَدْلاً بَعْدَما مُلِئَتْ ظُلْماً وَجَوْراً وَأَشْهَدُ أَنَّ أَقْوالَهُمْ حُجَّةٌ وَامْتِثالَهُمْ فَرِيضَةٌ وَطاعَتَهُمْ مَفْرُوضَةٌ وَمَوَدَّتَهُمْ لازِمَةٌ مَقْضِيَّةٌ وَالْاِقْتِداءَ بِهِمْ مُنْجِيَةٌ وَمُخالَفَتَهُمْ مُرْدِيَةٌ، وَهُمْ سَاداتُ أَهْلِ الْجَنَّةِ أَجْمَعِينَ، وَشُفَعاءُ يَوْمِ الدِّينِ، وَأَئِمَّةُ أَهْلِ الْاَرْضِ عَلَى الْيَقِينِ وَأَفْضَلُ الْاَوْصِياءِ الْمَرْضِيِّينَ وَأَشْهَدُ أَنَّ الْمَوْتَ حَقٌّ وَمُسائَلَةَ الْقَبْرِ حَقٌّ وَالْبَعْثَ حَقٌّ، وَالنُّشُورَ حَقٌّ،وَالصِّراطَ حَقٌّ،وَالْمِيزانَ

मुखाल्फ़त तबाही है और वो सब के सब अहले जन्नत के सरदार हैं, क़यामत में शफ़ा'अत करने वाले और यक़ीनी तौर पर अहले ज़मीन के ईमाम (अ:स) हैं, वो पसंदीदा औसिया में से अफ़ज़ल हैं, और मै गवाही देता हूँ की मौत हक़ है, क़ब्र में सवाल व जवाब हक़ हैं, और दुबारा उठना हक़ है, क़यामत में हाज़री हक़ है, सेरात से गुज़रना हक़ है, मीज़ाने अमल हक़ है, हिसाब हक़ है, और किताब हक़ है, इसी तरह जन्नत हक़ है, और जहन्नम हक़ है, नीज़ क़यामत आने वाली है, इसमें कोई शक नहीं और अल्लाह इन्हें ज़रूर उठाएगा जो क़ब्रों में हैं! ऐ माबूद! तेरा फज़ल मेरा सहारा, और तेरी रहमत व बख्शीश मेरी उम्मीद है मेरा कोई ऐसा अमल नहीं जिस से मै जन्नत का हक़दार बनू और न ईबादत है के जो तेरी खुशनूदी का बाईस हो सिवाए इसके के मै तेरी तौहीद और अदल पर एताक़ाद रखता हूँ और तेरे फ़ज़ल व एहसान की उम्मीद रखता हूँ और तेरे	अल-मौता हक़'क़ुन व मुसा-अ लता अल क़बरी हक़'क़ुन वल बा'असा हक़'क़ुन वल नशूरा हक़'क़ुन वल सिराता हक़'क़ुनवल मिज़ाना हक़'क़ुन वल हिसाबा हक़'क़ुन वल किताबा हक़'क़ुन वल जन'नता हक़'क़ुन वल नारा हक़'क़ुन व अन्ना अस'सा-अता आती'यतुन ल'रैबा फ़ीहा व अन्ना अल्लाहा यब'असू मन फ़ि अल-क़ुबूरी अल्लाहुम्मा फ़ज़-लुका रजा'ई व करामुका व रह'मतूका अ'मली ला अमला ली अस-तहीक्कू बेहि अल-जन्नता वला ता-अता ली अस्तौजिबू बिहा अल-रिज़वानाइल्ला अन्नी'ई तक़द'तू तौही'दका व अद्लका व तर'जय-तू एहसा'नका व फ़ज़'लका व तशा-फ़्फा-अतु इलैका बिल-नबिय्यी व आलिहि मिन अहिब'बतिका व अन्ता अकरमु अल-अकरामीना राहेमीना अल-हमूव अर व सल-लल-लाहू अला नबी'य्यिना मुहम्मदीन व आलेही अजमा'ईना अल-तय्येबीना अल-	حَقٌّ،وَالْحِسابَ حَقٌّ، وَالْكِتابَ حَقٌّ،وَالْجَنَّةَ حَقٌّ وَالنَّارَ حَقٌّ،وَأَنَّ السَّاعَةَ آتِيَةٌ لاَ رَيْبَ فِيها، وَأَنَّ اللهَ يَبْعَثُ مَنْ فِى الْقُبُورِ اَللّٰهُمَّ فَضْلُكَ رَجَائِى، وَكَرَمُكَ وَرَحْمَتُكَ أَمَلِى، لاَ عَمَلَ لِى أَسْتَحِقُّ بِهِ الْجَنَّةَ، وَلاَ طَاعَةَ لِى أَسْتَوْجِبُ بِهَا الرِّضْوَانَ إِلاَّ أَنِّى اعْتَقَدْتُ تَوْحِيدَكَ وَعَدْلَكَ، وَارْتَجَيْتُ إِحْسَانَكَ وَفَضْلَكَ وَتَشَفَّعْتُ إِلَيْكَ بِالنَّبِيِّ وَآلِهِ مِنْ أَحِبَّتِكَ وَأَنْتَ أَكْرَمُ الأَكْرَمِينَ وَأَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ، وَصَلَّى اللهُ عَلَى نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ وَآلِهِ أَجْمَعِينَ الطَّيِّبِينَ الطَّاهِرِينَ وَسَلَّمَ تَسْلِيماً كَثِيراً كَثِيراً، وَلاَ حَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ إِلاَّ بِاللهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيمِ اَللّٰهُمَّ يَا أَرْحَمَ

हुज़ूर तेरे नबी (स:अ:व:व) और इनकी आल (अ:स) की शफ़ा'अत लाया हूँ जो तेरे महबूब हैं और तू सबसे ज़्यादा करम करने वाला और सबसे ज़्यादा रहम करने वाला है और हमारे नबी मुहम्मद (स:अ:व:व) पर ख़ुदा की रहमत हो जो पाको पाकीज़ा हैं और इनपर सलाम हो, सलामे ख़ास ज़्यादा बहुत ज़्यादा और इन्हें कोई ताक़त व क़ुव्वत मगर वो जो बुलंद व बरतर ख़ुदा से मिलती है! ऐ माबूद! सबसे ज़्यादा रहम करने वाले बेशक मै अपना यह अक़ीदा और दीन में साबित क़दमी तेरे सुपुर्द करता हूँ और तू बेहतरीन अमानतदार है और तुने हमें अमानतों की हिफ़ाज़त का हुक्म दिया है, हमें अपनी रहमत से मेरा यह अक़ीदा ब'वक़्ते मर्ग मुझे याद दिला देना! वास्ता तुझे तेरी रहमत का ऐ सबसे ज़्यादा रहम करने वाले! ऐ माबूद! वक़्ते मर्ग ईस अक़ीदे से हटने से मै तेरी पनाह तलब करता हूँ!	ताहेरीना व सल-लमा तस्लीमन कसीरण कसीरण व लाहौ'ला व ला क़ुवता इल्ला बिल्ला हिल अलियुल अज़ीम अल्लाहुम्मा या अर्हमर राहेमीन इन्नी औदा'तुका यक़ीनी हाज़ा व सबाता दिनी व अन्ता खैरु मुस्तौदा'ईन व क़द अमरतना बे'हीफ़ज़ी अल-वदा-ए-ई फ़'रुद-दहु अलैय्या वक़्ता हुज़ूरी मौती व इन्दा मुसा'अ-लती मुन्करिन व नकीरिन बे रहमतिका या अर्हमर राहेमीन	الرَّاحِمِينَ إِنِّی أَوْدَعْتُکَ يَقِينِی ہٰذَا وَثَبَاتَ دِينِی وَأَنْتَ خَيْرُ مُسْتَوْدَعٍ،وَقَدْ أَمَرْتَنَا بِحِفْظِ الْوَدائِعِ فَرُدَّهُ عَلَیَّ وَقْتَ حُضُورِ مَوْتِی بِرَحْمَتِکَ يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِينَ

कई प्रमाणित रिपोर्ट के अनुसार निम्नलिखित कथन को भी दुआ में शामिल किया है :

ऐ माबूद! वक़्ते मर्ग ईस अक़ीदे से हटने से मै तेरी पनाह तलब करता हूँ	अल्लाहुम्मा इन्नी अ-उज़ो-बिका मिन-अल-अदिया'लती इंदल'मौत	اللَّهُمَّ إِنِّي أعُوذُ بِكَ مِنَ ٱلعَدِيلَةِ عِنْدَ ٱلْمَوْتِ

अ'दीला मौत से मुराद, मौत के वक़्त हक़ से बातिल की तरफ़ फिर जाना है, यानी जाँ-कुनी (मौत) के वक़्त शैतान शक में डाल कर गुमराह कर देता है और यू इंसान ईमान छोड़ बैठता है!यही वजह है की दुआओं में ऐसे सूरते हाल से पनाह तलब की गयी है! फ़ख़रुल मोहक़्'क़े'क़ीन ने फ़रमाया के जो मौत के वक़्त ईस ख़तरे से महफूज़ रहना चाहता है इसे ईमान और उसूले दीन की दलीलें ज़ेहन में रखना चाहिए और फिर इनको बतौर अमानत ख़ुदा की बारगाह में पेश कर देना चाहिए ताकि मौत की घड़ी में यह अमानत इसे वापस मिल जाए! ईस का तरीक़ा यह है की अक़ाएदे हक़'क़ा क़ो दोहराने के बाद कहें:

ऐ माबूद, ऐ सब से ज़्यादा रहम करने वाले,	अल्लाहुम्मा या अर्हमर राहेमीन	اللَّهُمَّ يَا أرْحَمَ ٱلرَّاحِمِينَ
बेशक मै अपना यह अक़ीदा और दीन में अपनी साबित क़दमी तेरे सुपुर्द करता हूँ;	इन्नी क़द अव्दातुका यक़ीनी हाज़ा व सबाता दिनी	إِنِّي أوْدَعْتُكَ يَقِينِي هٰذَا وَثَبَاتَ دِينِي
और तू बेहतरीन इमानात्दार है.	व अन्ता खैरु मुस्तव्दा-ईन	وَأنتَ خَيْرُ مُسْتَوْدَعٍ
और तुने हमें अमानतों की हिफ़ाज़त का हुक्म दिया है;	ई'ई-वदा-अल हीफ़ज़ी-बी अमरतना क़द व	وَقَدْ أمَرْتَنَا بِحِفْظِ ٱلْوَدَائِعِ
बस अपनी रहमत से मेरा यह अक़ीदा मरने के वक़्त मुझे याद दिला देना	फ़ा रुद'दाहु आ'लय्या वक़ता हुज़ूरी मौती	فَرُدَّهُ عَلَيَّ وَقتَ حُضُورِ مَوْتِي

बस ईन बुज़ुर्गवार के फ़रमान के मुताबिक़ ईस दुआए अदीला का पढ़ना और ईस के मतलबों क़ो मरने के वक़्त दिल में रखना, हक़ से फिर जाने के ख़तरे क़ो रोकता है! अब रही यह बात की यह दुआ मनक़ूल है या खुद उल्माए कराम ने इसे जमा किया है या बनाया है? ईस बारे में अर्ज़ है की इल्मे हदीस के माहिर और अखबारे अ'ईम्मा (अ:स) के जमा करने वाले अजल आलम, मोहद'दिस ना'क़द व बा-बसीरत और हमारे उस्ताद मोहद्दिस आज़म अलहाज मौलाना मिर्ज़ा हुसैन नूरी (ख़ुदा इनके मर'क़द क़ो रौशन करे) का फ़रमान है की मारूफ दुआए अदीला बाज़ उलमा की वज़ा करदा है! यह किसी ईमाम (अ:स) से नक़ल नहीं हुई है और न ही किसी हदीस की किताब में पाई जाती है

ऐसी ही एक **दुआ हिफ्ज़े ईमान** के लिये::-

वाज़े रहे की शेख़ तूसी (अ:र) ने मोहम्मद सुलेमान वेल्मी से रिवायत की है की मै ने **ईमाम जाफ़र सादीक़ (अ:स)** की ख़िदमत में अर्ज़ किया के बाज़ शिया भाइयों का कहना है की ईमान की दो किस्में हैं, यानी एक मोहकम व साबित और दोस्सरा आरजी व इमानती जो ज़ायेल हो सकता है, बस आप मुझे कोई ऐसी दुआ तालीम फ़रमायें के जिसके पढ़ने से मेरा ईमान क़ायेम व साबित रहे और ज़ायेल न होने पाए! ईस पर आप (अ:स) ने फ़रमाया की हर वाजिब नमाज़ के बाद यह दुआ पढ़ा करो ”

मै राज़ी हूँ इसपर की अल्लाह मेरा रब	रज़ीयतो बिल-लाहे रब'बन	رَضِيتُ بِٱللَّهِ رَبّاً
और हज़रत मोहम्मद (स:अ:व:व) मेरे नबी हैं	व बी मुहम'मदीन सल-लल लाहो अलय्ही व आलेही नबीयाँ	وَبِمُحَمَّدٍ صَلَّىٰ ٱللَّهُ عَلَيْهِ وَآلِهِ نَبِيّاً
और इस्लाम मेरा दीन है,	व बिल इस्लामी दीनन	وَبِٱلْإِسْلَامِ دِيناً
और क़ुर'आन मेरी किताब है,	व बिल क़ुर-आंनी किताबन	وَبِٱلْقُرْآنِ كِتَاباً
और काबा मेरा क़िबला है,	व बिल का'बते क़िब'लतों	وَبِٱلْكَعْبَةِ قِبْلَةً
और राज़ी हूँ इसपर की अली (अ:स) मेरे मौला और ईमाम हैं,	व बे अलीयिन वलीयन व इमामन	وَبِعَلِيٍّ وَلِيّاً وَإِمَاماً
फिर हसन (अ:स) व हुसैन (अ:स),	व बिल हसनी व बिल हुसैन	وَبِٱلْحَسَنِ وَٱلْحُسَيْنِ
अली (अ:स) इब्ने हुसैन (अ:स), मोहम्मद (अ:स) इब्ने अली (अ:स),	व अली-इब्निल हुसैन व मुहम्मद इब्ने अलीयिन	وَعَلِيِّ بْنِ ٱلْحُسَيْنِ وَمُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ
जाफ़र (अ:स) इब्ने मोहम्मद, मूसा (अ:स) इब्ने जाफ़र (अ:स),	व जाफ़र इब्ने मुहम्मदीन व मूसा इब्ने जा'फ़रीन	وَجَعْفَرِ بْنِ مُحَمَّدٍ وَمُوسَىٰ بْنِ جَعْفَرٍ

अली (अ:स) इब्ने मूसा, मोहम्मद (अ:स) इब्ने अली (अ:स),	व अली इब्ने मूसा, व मुहम्मद इब्ने अलीयिन	وَعَلِيِّ بْنِ مُوسَىٰ وَمُحَمَّدِ بْنِ عَلِيٍّ
व अली इब्ने मुहम्मदीन वल हसन इब्ने अलीयिन	व अली इब्ने मुहम्मदीन वल हसन इब्ने अलीयिन	وَعَلِيِّ بْنِ مُحَمَّدٍ وَٱلْحَسَنِ بْنِ عَلِيٍّ
वल हुज्जत इब्ने अल हसने	वल हुज्जत इब्ने अल हसने	وَٱلْحُجَّةِ بْنِ ٱلْحَسَنِ
की ईन पर अल्लाह की रहमतें हों, मेरे ईमाम हैं!	सल्वातु अल्लाहि अलय्हीम अ-इम्मतन	صَلَوَاتُ ٱللَّهِ عَلَيْهِمْ أَئِمَّةٌ
ऐ माबूद! मै राज़ी हूँ की वो मेरे ईमाम (अ:स) हैं;	अल्लाहुम्मा इन्नी रज़ी'अतु बिहिम अ-इम्मतन	اَللَّهُمَّ إِنِّي رَضِيتُ بِهِمْ أَئِمَّةً
बस इन्हें मुझे से राज़ी फ़रमा दे	फ़ा अर'ज़नी'अ-लहुम	فَارْضَنِي لَهُمْ
बेशक तू हर चीज़ पर क़ादिर है!.	इन्नका अला कुल्ले शय'ईन क़दीरून	إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيءٍ قَدِيرٌ

और अधिक दुआओं के लिये यहाँ क्लिक करें :
www.IslamInHindi.org / http://hindi.duas.org